कुमार जीवन - 21

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **कुमारों से :-** कुमार ग्रुप अर्थात् डबल स्वतन्त्र। **एक लौकिक जिम्मेवारी से स्वतन्त्र और दूसरा आत्मा सर्व बन्धनों से स्वतन्त्र। माया के बन्धन और लौकिक बन्धन से भी स्वतन्त्र।** ऐसे स्वतन्त्र हो? डबल स्वतन्त्र आत्मायें डबल सेवा भी कर सकती हैं। क्योंकि कुमारों को स्वतन्त्र होने के कारण समय बहुत है। तो समय के खजाने से अनेकों को सम्पत्तिवान बना सकते हो। सबसे बड़े से बड़ा खजाना संगमयुग का समय है। तो कुमार ग्रुप अर्थात समय के खजाने सम्पन्न और समय होन के कारण औरों की सेवा में भी सम्पन्न् बन सकते हो। सेवा की सबजेक्ट में भी 100% परसेन्ट ले सकते हो।

➳ _ ➳ **सदा बन्धनमुक्त अर्थात् सदा योगयुक्त। संसार ही बाप हो गया ना। कुमारों का संसार क्या हैं? बापदादा। औरों का संसार तो हद भी है लेकिन आप लोगों का एक ही बेहद का संसार है। तो सहजयोगी भी हो क्योंकि संसार में ही बुद्धि जायेगी ना। संसार ही बाप है तो बुद्धि बाप में ही जायेगी। तो कुमारों को सहजयोगी बनने की लिफ्ट है।**

➳ _ ➳ तो अब अशान्त आत्माओं को शान्ति देना, भटकी हुई आत्माओं को ठिकाना देना, यह बड़े से बड़ा पुण्य करते रहो। जैसे प्यासी आत्मा को पानी पिलाना पुण्य है वैसे यह सेवा करना अर्थात् पुण्य आत्मा बनना। तो किसी भी अशान्त आत्मा को देख तरस आता है ना। **रहमदिल बाप के बच्चे हो तो सदा पुण्य का काम करते रहो। (31-12-1981)**

➢➢ कौन से बंधन आत्मा को बांधे हुए हैं ?

➳ _ ➳ देह

➳ _ ➳ देह के समबन्ध

➳ _ ➳ देह के हद के संस्कार

➳ _ ➳ देह के साधन

➳ _ ➳ सांसारिक लोकलाज और मर्यादा

➳ _ ➳ देह की बीमारियाँ

➳ _ ➳ व्यर्थ संकल्प

➳ _ ➳ स्वार्थ वाली सेवा

➳ _ ➳ इच्छाएं / कामनाएं

→ एक इच्छा समाप्त होती है तो दूसरी इच्छा आ जाती है

➳ _ ➳ विकार

➢➢ यह संसार एक रोरव नरक है

➳ _ ➳ इस संसार में अब हमारा कोई काम नहीं है

→ हम इस संसार में सिर्फ और सिर्फ 2 कार्यों के लिए रुके हुए हैं

- स्वयं का कल्याण
- दूसरों का कल्याण

➳ _ ➳ इस संसार से अब हमें कोई प्राप्ति नहीं है

➳ _ ➳ इस संसार के किसी पदार्थ और किसी सम्बन्ध में कोई मोह नहीं रखना है

→ मोह इस संसार की सब व्याधियों की जड़ है

➢➢ आध्यात्मिक जाग्रति

➳ _ ➳ थोड़ी सी आत्धयात्मिक जाग्रति उस लोहे की तरह है

→ जब तक आग में रखो सिर्फ तभी तक लाल है *(जब तक मधुबन या सेण्टर में है)*

- और आग से बहार निकालते ही अपने असली काले रंग में आ जाती है *(सिर्फ तभी तक ब्राह्मण हैं)*

➳ _ ➳ सेवा का कोई भी साधन कभी भी माया का साधन बन सकता है

→ आध्यात्म इतना सस्ता नहीं है / योगी बनना इतना सस्ता नहीं है

- सिर्फ Peace Of Mind Channel देख लेने से तो आध्यात्मिक नहीं बन जाओगे
- योगी बनने के लिए अपना पूरा जीवन स्वाहा करना होता है

➳ _ ➳ जैसे आसमान में उड़ते हुए चील का ध्यान ज़मीन पर पड़े मॉस की तरफ होता है

→ वैसे ही इस योगी जीवन के आसमान में कहीं हमारा ध्यान इन्द्रियों के आकर्षण / उत्तेजना की तरफ तो नहीं है ?

➳ _ ➳ मैं के बंधन से मुक्त हुए बिना आध्यात्मिक जीवन में दिव्यता नहीं आ सकती

➳ _ ➳ काम विकार को जीतने के बाद ही यह Clarity आती है की

→ हमारे में दुसरे विकार भी है

➳ _ ➳ आध्यात्मिक जीवन का लक्ष्य है :- आत्म संयम